ढलती उम्र में जीवनसाथी की जरूरत ?

– आचार्य सत्यनारायण पाटोदिया
Contact : 9314877066, 9414827066
email : info@meerahospital.com

कहावत है कि बचपन में किसी की माँ मर जाए या बुढापे में किसी की बीबी मर जाए, तो उसकी जिन्दगी बर्बाद हो जाती है। हिन्दु भगवान कृष्ण को पूजते हैं, जिनका जन्म माता देवकी ने दिया और पालन पोषण यशोदा माता ने किया था। मुसलमानों के पैगम्बर मोहम्मद साहिब का जन्म उनकी माता आमना ने दिया था परन्तु उनका पालन पोषण माता हलीमा ने किया था। इसीलिए मुसलमानों में माँ के दूध का कर्ज चुकाने की बहुत बड़ी महत्ता है।

हिन्दु हो या मुसलमान, पालने पोसने वाली माँ का महत्त्व जन्म देने वाली माँ से अधिक माना गया है। इसीलिए कहा जाता है कि यदि बचपन में किसी की माँ मर जाये और उसका पालन पोषण करने वाला कोई नहीं हो, तो उसकी जिन्दगी तबाह हो जाती है। क्योंकि जिस बच्चे को बचपन में अपनी माँ का प्यार नहीं मिलता है, उसमें अच्छे संस्कार डालना बहुत मुश्किल होता है।

दूसरी ओर, बुढ़ापे में पत्नी ही अपने पति का सच्चा सहारा होती है। वह अपने पति का छोटे बच्चे की तरह पालन पोषण करती है। सच्चाई तो यह है कि बुढ़ापे में पत्नी माँ का रोल अदा करती है और इसीलिए हमारे देश के कुछ संत महात्माओं ने यहाँ तक कहा है कि बुढ़ापे में पत्नी अपने पति की माँ बन जाती है। पूज्य रामकृष्ण परमहंस अपनी पत्नी को शारदा माता कहकर पुकारते थे। महात्मा गाँधी भी अपनी पत्नी को कस्तूरबा कहकर पुकारते थे। ''बा'' का गुजराती में अर्थ होता है माता। जब पत्नी अपने पति की माँ का रोल अदा करती है, तब उनके बीच की दूरियाँ समाप्त हो जाते हैं और उनका प्रेम पवित्र गंगा की तरह हा जाता है। गंगा जब गौ–मुख से निकलती है, तो एक पतली धारा के रूप में निकलती है, पर बहते बहते समुद्र से मिलने जब बंगाल की खाड़ी में पहुँचती है, तब उसका पाट कितना विशाल एवं चौड़ा हो जाता है। इसी तरह से पति पत्नी का प्रेम भी शुरू में कम होता है और बुढ़ापे में आकर बहुत बढ़ जाता है।

ऐसे में, यदि अधेड़ अवस्था में किसी की पत्नी गुजर जाती है, तो अकेलेपन के मारे उसकी जिन्दगी वीरान हो जाती है। इसी सच्चाई को ध्यान में रखते हुए यदि हमें अपने समाज में सच्चा सुधार करना है, तो विधवा विवाह को प्रोत्साहन देना होगा। यदि किसी विधुर का विवाह किसी विधवा से करा दिया जाये तो उन

दोनों की बची हुई जिन्दगी सुधर जायेगी। वे दोनों जीवन के उत्तरार्ध में एक–दूसरे का सहारा बन जायेंगे।

जवानी में यदि किसी की धर्मपत्नी गुजर जाती है, तो एक तरफ चिता जलती है और दूसरी तरफ वहाँ पर उपस्थित लोग–बाग उस व्यक्ति के लिये रिश्ते तलाश करना शुरू कर देते हैं। जवान आदमी की तो दूसरी शादी बहुत आसानी से हो जाती है और लोग दूसरी शादी कराने के लिए पीछे पड़ जाते हैं, परन्तु बुढ़ापे में यदि किसी की पत्नी मर जाये और यदि वह दूसरी शादी करने की इच्छा भी प्रकट करता है, तो लोग उसे हिकारत की नजर से देखते हैं। जबकि वास्तविकता यह है कि बुढ़ापे में ही पति–पत्नी एक दूसरे के सुख–दुख के असली साथी होते हैं। जवानी तो वासना के ज्वार में डूबकर जैसे–तैसे कट जाती है, परन्तु बुढ़ापे में जब शरीर थक जाता है और अपना सुख–दुख बाँटने के लिए एक साथी की जरूरत होती है, उस समय यदि साथ में कोई नहीं हो तो जिन्दगी वीरान हो जाती है। बेटे–बहू तो अपने–अपने काम–धन्धे में लगे रहते हैं, पोते–पोती अपने–अपने स्कूल और होम वर्क में लगे रहते हैं, तब बूढ़े बाप का हालचाल पूछने की किसी को फुर्सत नहीं मिलती है। विधवा माँ तो घर में नोकरानी बनकर रह जाती है। जब बुढ़ापे में बीबी जिन्दा रहती है, तो मोहल्ले की बूढ़ी औरतें भी भाईसाहब–भाईसाहब कहकर नमस्ते करती हैं, परन्तु किसी की बीबी गुजर जाये तो उस विधुर को नमस्ते कहने में भी मोहल्ले की औरतों को डर लगता है। यदि उस बूढ़े आदमी ने अपनी दिवंगत पत्नी की सहेलियों में से किसी को नमस्ते कह दिया, तब वह बूढ़ी औरत भी उसके नमस्ते का जवाब नहीं देगी और उसे गिरी नजर से देखेगी क्योंकि दुनिया वाले उनको जीने नहीं देंगे।

इन सब सच्चाईयों को जानकर यदि हमारे समाज के नेता समाज को सुधारने की बातें करते हैं, तो उनसे मेरा अनुरोध है कि समाज के विधुर लोगों का घर बसाने के लिए विधवा विवाह को प्रोत्साहन देवें। इससे समाज में अनाचार और दुराचार भी कम फैलेगा। फिर से घर बसाकर ऐसे बुजुर्ग दम्पत्ती को अपनी जीवन नय्या को संसार सागर से पार उतारने में सहायता मिलेगी। इनके दिल से निकली दुआओं का असर यह होगा कि इस दिशा में प्रयत्न करने वाले लोगों का जीवन भी सुखी और सम्पन्न होगा।

जवान लड़के–लड़कियों लोगों की शादी–विवाह के लिये तो अधिक धन की आवश्यकता होती है, परन्तु किसी विधवा का विधुर से विवाह कराने में बहुत अधिक धन की आवश्यकता भी नहीं होती है। साधारण तरीके से भी उनका विवाह कराकर पुण्य कमाया जा सकता है। बुढ़ापे में तो विधुर का घर बसा बसाया होता है, केवल

एक घरवाली की जरूरत होती है, जो यदि मिल जाये तो दो निरीह प्राणियों का शेष जीवन सुधर जाता है और वे अपना जीवन सुख से जी सकते हैं।

समाज में सामूहिक विवाह को किसी जमाने में अच्छी नजर से नहीं देखा जाता था, परन्तु अब सामूहिक विवाह प्रचलन में आ गये है और इनके फायदे देखते हुए अनेक जातियों के लोग सामूहिक विवाह का आयोजन करने लगे हैं। नवयुवकों और युवतियों के लिए तो सामूहिक विवाह का आयोजन शुरू हो गया है, परन्तु विधुर और विधवाओं का भी यदि सामूहिक विवाह कराया जायेगा, तो लोगों के मन की हिचक दूर होगी और अधिक से अधिक जोड़े बन सकेगें।

इस हेतु विधुर–विधवाओं का परिचय सम्मेलन का आयोजन करना होगा। हमारे देश में तो अभी शुरूआत नहीं हुई है, परन्तु विधुर विधवाओं के क्लब की शुरूआत विदेशों में हो चुकी है। हमें सार्थक प्रयत्न इस दिशा में करने होगें, जिससे कि विधुर–विधवा अपना नया संसार बसाने के लिऐ आपस में प्रेम और विश्वास का वातावरण निर्मित कर सकें।

बुजुर्गों के विवाह कर लेने से उनके युवा बच्चों की भी मानसिक समस्या दूर होगी। आजकल नौकरी–पेशा नवयुवक अपने बूढ़े माता–पिता का अपने पास नहीं रख पाते हैं। उनको अपने विधुर पिता या विधवा माँ को कई बार अकेले छोड़ना पड़ता है, यदि उनके माँ या पिता का फिर से घर बस जावे तो उनकी चिन्ता कम हो जाती है।